महर्षि दयानन्द सरस्वती

के 200वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में

द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्र-अभ्युदय एवं भारतीय
ज्ञान परम्परा के संवाहक महर्षि
दयानन्द सरस्वती

15-16 मार्च, 2024

स्थान : मानविकी पीठ सभागार
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

-: आयोजक :-

मानविकी पीठ, संस्कृत विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
एवं
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

प्रिय आत्मन् !

आपको यह सूचित करते हुए हर्षानुभूति हो रही है कि संस्कृत विभाग, मानविकी पीठ, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान (जयपुर) द्वारा दि. **15-16 मार्च-2024 को 'राष्ट्र-अभ्युदय एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती'** विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आप उक्त विषय के गहन अध्येता हैं, इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में आप सादर आमन्त्रित हैं।

शोध संगोष्ठी का उद्देश्यः

वैदिक ऋचाओं के अमर गायक, 'वेदों की और लौटो का उद्घोष देने वाले भारतीय ज्ञानपरम्परा के महान् संवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वदेश, स्वभाषा, स्वराज्य, स्वधर्म एवं स्वसंस्कृति के महामन्त्र के अमर गायक तथा राष्ट्रजागरण काल के अग्रणी मेधापुरुष, भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक तथा नवजागरण के अग्रदूत थे।

भारतीय नवजागरण का शंखनाद गुंजाने वाले महर्षि दयानन्द ने समाज में माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः, तथा यो जागार तम् ऋचः कामयन्ते का वैदिक मन्त्र फूंका। दयानन्द की ऋषिप्रज्ञा ने राष्ट्र की अवधारणा को समग्रता में समझा। वे समग्र क्रान्ति के अग्रदूत, आर्य वैदिक परम्परा के पुनरुद्धारक व महान् राष्ट्रवादी विचारक थे। उनकी विचारधारा का आधार वेद था और वे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छठवें समुल्लास (अध्याय) में राजधर्म को विस्तार से प्रतिपादित करते हैं। अर्चत्रु स्वराज्यम्- "हम स्वराज्य एवं चक्रवर्ती राज्य की अभ्यर्चना करें" जैसे कथन इसकी पुष्टि करते हैं। महर्षि दयानन्द वेदोऽखिलो धर्ममूलम् की अवधारणा को पुनःजागरित करना चाहते थे। वेद सर्वविद्यानिधान (सर्वज्ञानमयो हि सः) हैं। अतः वेद को आधार बनाकर वे समग्र विकास एवं उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना चाहते थे। उनकी यह वाग्धारा भारतीय जनमानस के जीवन की विविध दिशाओं को अभिसिंचित करती हैं। देश की सनातन संस्कृति, भाषा तथा ज्ञान विज्ञान से वे राष्ट्र अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त करना चाहते थे। समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड, अविद्या एवं कुरीतियों का उन्मूलन एक स्वस्थ एवं समृद्ध समाज व नैतिक मूल्यों का संस्थापन सामाजिक जागरण की परिधि में आता है। स्वामी जी आधुनिक युग के नवजागरण के पुरोधा ही नहीं प्रत्युत महान् समाज सुधारक एवं युगद्रष्टा थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन महीने के शुक्लपक्ष की दशमी (12 फरवरी 1824) को टंकारा, काठियावाड़ क्षेत्र (गुजरात का मोरबी जिला) में एक भारतीय हिंदू ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका प्रारम्भिक नाम मूलशंकर था वर्तमान में देश महर्षि दयानन्द सरस्वती का दो सौ वाँ जयन्ती वर्ष मना रहा है ऐसे में "राष्ट्र-अभ्युदय एवं भारतीय ज्ञानपरम्परा के संवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती" शीर्षकांकित विषय पर विमर्श प्रासंगिक है।

संगोष्ठी में विमर्श हेतु शीर्षक

- महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं भारतीय ज्ञानपरम्परा
- वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द
- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं वेदार्थ
- दयानन्द का त्रैतवाद
- दयानन्द का औपनिषदिक चिन्तन
- दयानन्द का शब्दानुशासन
- महर्षि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन

- दयानन्द का राष्ट्रवाद
- महर्षि दयानन्द का वैज्ञानिक चिन्तन
- राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार
- महर्षि दयानन्द के राजनैतिक विचार
- भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पुरोधा दयानन्द
- दयानन्द का सामाजिक चिन्तन एवं समाज सुधार
- नारी सशक्तीकरण के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द के विचार
- महर्षि दयानन्द प्रतिपादित शिक्षा पद्धति
- सत्यार्थप्रकाश की प्रासंगिकता
- दयानन्द सरस्वती की गौकरुणानिधि
- पुनर्जागरण के पुरोधा स्वामी दयानन्द सरस्वती

आधुनिक भारत के आदि निर्माता दयानन्द समग्रकान्ति के अग्रदूत दयानन्द सरस्वती

शोध सारांश :

शोध आलेख एवं सारांश कम्प्यूटर टंकित (A-4 page, double space Hindi font 16, /English font-12 Times New Roman), हिन्दी फॉण्ट Devlys 10/Krutidev 010 में एम.एस. वर्ड में दिनांक 13 मार्च 2024 तक ई-मेल sanskrituniraj@gmail.com पर या कोरियर / डाक द्वारा" संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जेएलएन मार्ग, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर-302004" पर प्रेषित करें।

पंजीकरण :

प्रतिभागिता हेतु पंजीकरण राशि	**संकाय सदस्य**	**शोध छात्र-छात्राएँ**
दिनांक 13 मार्च 2024 तक	Rs. 1000/-	Rs. 700/-

Bank Details : - Bank Name - UCO Bank, University of Rajasthan, Jaipur
A/C No- 20270110062586 | IFSC-UCBA0002027

विशेष :- संगोष्ठी में प्रतिभागिता हेतु ऑनलाईन एवं ऑफलाईन दोनो माध्यमों की व्यवस्था है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का संक्षिप्त परिचय :

स्वामी दयानन्द का जन्म 12 फरवरी, 1824 को पश्चिमी भारतीय राज्य गुजरात की मोरवी रियासत के टंकारा ग्राम में हुआ था। तत्कालीन हिंदू धर्म दर्शन और धर्मशास्त्र के विभिन्न विद्यालयों के बीच विभक्त था, ऐसे में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक ज्ञान को पुनर्स्थापित करने एवं वेदों के प्रति भारतीय जनमानस को जागृत करने हेतु अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया, जिनमें प्रमुख हैं- सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, पंचमहायज्ञ विधि, गौकरुणानिधि, वेदांगप्रकाश संस्कारविधि आदि। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार का माध्यम हिन्दीभाषा को बनाया।

महर्षि ने 1864 में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द के सानिध्य में अध्ययन पूर्ण किया। तदुपरान्त उन्होंने वैदिक प्रचार और शिक्षा के लिए 1874 ईस्वी तक सम्पूर्ण भारत में विभिन्न यात्राएँ एवं प्रवास किया। 1875 ईस्वी में मुम्बई में औपचारिक रुप से आर्य समाज की स्थापना की। अपने कार्यों और वैदिक ग्रंथों को प्रकाशित करने और प्रचार-प्रसार करने के लिए 1882 में अजमेर में परोपकारिणी सभा की स्थापना की। विषयुक्त दूध पिलाने से महर्षि दयानन्द सरस्वती का भौतिक शरीर पूर्णतः क्षीण हो गया था ऐसे में 30 अक्टूबर 1883 ई. दीपावली के दिन "हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो" यह कहते हुए ऋषि दयानन्द ने अपने भौतिक शरीर का त्याग कर दिया।

संरक्षक :

प्रो. अल्पना कटेजा

कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय

संयोजक :

प्रो. राजेश कुमार

मानद् निदेशक मानविकी पीठ,
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

समन्वयक :

जीववर्धन शास्त्री

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

आयोजन सचिव :

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा

सह-आचार्य
संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

स्वागत एवं प्रबन्ध समिति

प्रो. राम सिंह चौहान	**डॉ. चंद्रमणि चौहान**
प्रो. सुनीता शर्मा	**डॉ. मोनिका जैन**
प्रो. ज्योत्स्ना वशिष्ठ	**डॉ. महिपाल यादव**

आर्य किशन लाल गहलोत
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

जय सिंह गहलोत
कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

कार्यालय

संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

जेएलएन मार्ग, जयपुर, राजस्थान-302004

E-mail: sanskrituniraj@gmail.com

Contact : 9982908078, 9667110585

SCAN ME!

संगोष्ठी में पंजीयन हेतु क्यूआर कोड स्कैन कर गूगल फॉर्म भरें

कार्यक्रम स्थल की लोकेशन के लिये स्कैन करें।

पंजीयन शुल्क भुगतान के लिए